



लोग जिनके एक घटना ने जीवन बदले



संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Log Jinke Ek Ghatna Ne Jeevan Badle (One Incident Changed the Life)

Cover Page Picture : Maharshi Ved Vyaas Jee

Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Read more such stories : www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India



विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका	4
लोग जिनके एक घटना ने जीवन बदले	5
1 विश्वामित्र जी	7
2 वाल्मीकि जी	17
3 महात्मा बुद्ध	24
4 सम्राट चन्द्रगुप्त	29
5 महाकवि कालीदास	32
6 राजा भर्तृहरि	40
7 संत तुलसी दास	47
8 स्वामी विवेकानन्द	51

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर 2018

लोग जिनके एक घटना ने जीवन बदले

इस पुस्तक से पहले हम “कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ” की दो पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इसकी पहली पुस्तक¹ में हमने देश विदेश के राजा और कुछ बड़े लोगों के जीवन की ऐसी व्यक्तिगत घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं। इसकी दूसरी पुस्तक² में हमने कुछ वैज्ञानिकों के व्यक्तिगत जीवन की वैसी ही घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं।

और अब यह है इस कड़ी की तीसरी पुस्तक। इस पुस्तक में हम कुछ ऐसे लोगों के बारे में लिख रहे हैं जिनकी ज़िन्दगी की एक घटना ने उनकी पूरी ज़िन्दगी ही बदल दी। वे कुछ और थे और उस घटना के बाद कुछ और ही हो गये। पिछली पुस्तकों “कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ-1” और कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ-2” की तरह से, क्योंकि यह पुस्तक भी इतिहास की नहीं है इसलिये इसमें भी बहुत सारी ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं दी गयीं हैं बल्कि हर एक की ज़िन्दगी की केवल एक ऐसी घटना दी गयी है जिसने उस आदमी की पूरी ज़िन्दगी ही बदल दी।

इस प्रकार इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ न तो लोक कथाएँ हीं हैं और न ही उनमें कही गयी कहानियाँ हैं बल्कि सच्ची घटनाएँ हैं। अब क्योंकि ये सब सच्ची घटनाएँ हैं इसलिये इनको इतिहास भी कह सकते हैं।

हमें पूरा विश्वास है कि ऐतिहासिक कहानियों की यह पुस्तक तुम सबका मनोरंजन तो करेगी है साथ में नयी जानकारी के साथ साथ तुम सबके ज्ञान की सीमा को भी बढ़ायेगी। यह तुम्हें उन लोगों की ज़िन्दगी के बारे में बतायेंगी कि वे आज इस तरह के कैसे बने।

इन्हें पढ़ो और अपना ज्ञान बढ़ाने के साथ साथ इनसे अपना मनोरंजन भी करो।

¹ “Kuchh Aitihāsik Kahaniyan-1” was about the personal less known incidents of some kings and great people. There are over 20 people.

² “Kuchh Aitihāsik Kahaniyan-2” was about the personal less known incidents of some of the scientists and technologists.

1 विश्वामित्र जी

बच्चों तुमने विश्वामित्र जी का नाम तो सुना ही होगा। शायद उनके बारे में कुछ पढ़ा भी हो।

अगर तुमने तुलसी दास जी की रामायण सुनी या पढ़ी है तो उसमें तुमने विश्वामित्र जी का नाम जरूर ही सुना या पढ़ा होगा। ये ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी के नाम से मशहूर हैं। तुलसी की रामायण में ये दशरथ जी से उनके दोनों बेटे राम और लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा करने के लिये माँगने के लिये आते हैं।

आज हम उन्हीं के बारे में बात करने जा रहे हैं। ये अपनी कितनी ही बातों के लिये मशहूर हैं।

विश्वामित्र जी का असली नाम विश्वरथ था। बाद में ये विश्वामित्र बने। विश्वामित्र जी का जन्म भी रहस्यभरी परिस्थितियों में हुआ था।

उनका जन्म कैसे हुआ था यह एक लम्बी कहानी है और क्योंकि हमारा यह लेख उनके जन्म से सम्बन्धित घटनाओं को देना नहीं है इसलिये यहाँ हम उस कहानी को नहीं दे रहे हैं।

हालाँकि विश्वामित्र जी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र कहलाते हैं पर तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह एक क्षत्रिय राजा के क्षत्रिय बेटे थे। एक राजा के बेटे यानी एक राजकुमार यानी एक क्षत्रिय थे।

तो फिर वह एक ऋषि या ब्रह्मर्षि कैसे बन गये? एक ब्राह्मण कैसे बन गये? इसी की कहानी हम तुम्हें यहाँ बताने जा रहे हैं।

केवल एक घटना ने इनको राजकुमार से ब्रह्मर्षि बना दिया और ये अपना राजपाट छोड़ कर चले गये। पर वह कौन सी ऐसी एक घटना थी जिससे इनकी जिन्दगी में यह बदलाव आया। तो लो पढ़ो वह घटना यहाँ।

एक बार राजा होने के नाते ये अपनी सेना की एक टुकड़ी ले कर अपने राज्य का दौरा करने निकले। घूमते घूमते ये एक जंगल में आ निकले। वहाँ इन्होंने देखा कि जंगली जानवर आपस में बिना किसी शत्रुता के इधर उधर घूम रहे हैं। यह देख कर इनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

पूछने पर पता चला कि पास में ही ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी का आश्रम था। इन्होंने सोचा कि उनसे भी मिल लिया जाये सो ये अपनी सेना सहित उनसे मिलने के लिये उनके आश्रम जा पहुँचे।

वशिष्ठ जी का बहुत बड़ा आश्रम था। जब विश्वामित्र जी उनके आश्रम में पहुँचे तो उन्होंने उनका आदर से स्वागत किया और रात को अपने आश्रम में रुकने की प्रार्थना की।

विश्वामित्र जी ने सोचा कि यह तो खुद ही एक गुरु ब्राह्मण हैं ये एक राजा और उसकी सेना को कैसे ठहरा सकेंगे सो उन्होंने उनको रात को ठहरने से नम्रतापूर्वक मना कर दिया। पर वशिष्ठ जी ने जब काफी जिद की तो वह मान गये।

अपने आश्रम की जरूरतों को पूरा करने के लिये वशिष्ठ जी के पास एक गाय थी - नन्दिनी गाय³। वही उनको सब कुछ देती थी - खाना पीना दूध दही घी यज्ञ का सामान आदि आदि।

अब वशिष्ठ जी के पास तो नन्दिनी गाय थी सो उसकी सहायता से उन्होंने राजा और राजा की सेना दोनों का शाही ढंग से स्वागत किया।

उन्होंने नन्दिनी से कहा — “देखो हमारे राजा आज हमारे मेहमान हैं उनका शाही ढंग से स्वागत करने के लिये सब सामान तैयार करो।” सो उसने उनके लिये कुछ ही मिनटों में सारा सामान तैयार कर दिया।

विश्वामित्र जी तो यह देख कर आश्चर्य में डूब गये क्योंकि जो सुविधायें वशिष्ठ जी ने उनको दी थीं वे सुविधायें तो उनके अपने लिये अपने राजमहल में भी नहीं थीं।

यह सब देख कर उनको लगा कि वह गाय तो राजा होने के नाते उनके पास होनी चाहिये। उन्होंने वशिष्ठ जी से बड़ी नम्रता से उस गाय को उनको देने के लिये पार्थना की।

वशिष्ठ जी बोले — “राजन यह गाय तो मुझे मेरे आश्रम की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिये कामधेनु की भेंट है। मेरे पास तो बस यही कुछ है अगर मैं उसे आपको दे दूँगा तो मैं अपने आश्रम का काम कैसे चलाऊँगा।”

³ Nandinee cow was the daughter of Kaamdhenu and was a wish fulfilling cow.

विश्वामित्र जी बोले — “पर मैं इस देश का राजा हूँ यह गाय तो मेरे पास होनी चाहिये। आप इसका क्या करेंगे?”

वशिष्ठ जी बोले — “मुझे बहुत दुख है कि मैं यह गाय आपको नहीं दे सकता।”

विश्वामित्र जी ने उनको धमकी दी — “मैं तो केवल आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ पर अगर आप इसे मुझे नहीं देंगे तो मुझे इसे आपसे लेने से कोई रोक नहीं सकता।”

कह कर विश्वामित्र जी ने अपनी सेना को हुकुम दिया कि वे वशिष्ठ जी के आश्रम से उनकी गाय उठा लें। राजा का हुकुम मान कर उन्होंने गाय के गले में एक रस्सी बाँधी और उसको ले चले।

वशिष्ठ जी बेचारे मजबूरी की हालत में अपना सिर हिलाते बैठे रह गये। नन्दिनी ने तब उनसे अपनी रक्षा अपने आप करने की आज्ञा माँगी जो वशिष्ठ जी ने उसको तुरन्त ही दे दी।

बस वह केवल एक बार ज़ोर से रँभायी और उसके रोम रोम से हजारों सैनिक निकल पड़े। विश्वामित्र जी की सेना इतने सारे दैवीय सैनिकों का सामना नहीं कर सकी और वे सब वहाँ से चले गये।

पर विश्वामित्र जी अपने इस अपमान को नहीं सह सके सो उन्होंने अपने 100 बेटों को उस गाय को लाने के लिये भेजा तो वे सब वशिष्ठ जी की एक ही हुंकार की आग से जल कर मर गये।

विश्वामित्र जी ने वशिष्ठ जी से पूछा कि उनके पास यह कौन सी शक्ति थी जो उनकी अपनी राजा की शक्ति से भी इतनी अधिक

थी। वशिष्ठ जी ने बताया कि यह उनकी तप की शक्ति थी। तब उनको लगा कि उनकी राजा की शक्ति तो वशिष्ठ जी की तप की शक्ति के सामने कुछ भी नहीं थी।

बस इसी घटना ने उनकी ज़िन्दगी बदल दी। तप की शक्ति प्राप्त करने के लिये उन्होंने अपना राज्य छोड़ा और तप करने के लिये हिमालय चले गये।

इस तप का समय उनका कई घटनाओं से भरा हुआ है। हालाँकि हम इस कहानी को यहीं खत्म कर सकते हैं पर उनके जीवन की उन घटनाओं को यहाँ वर्णन किये बिना उनके जीवन बदलने का कारण पूरा नहीं होगा सो हम उन घटनाओं को तुम लोगों को बहुत ही थोड़े में बताते हैं।

हिमालय जा कर उन्होंने शिव जी को प्रसन्न किया तो उन्होंने उनसे धनुष बाण की विद्या के और राक्षसों गन्धर्वों महर्षियों यक्षों के सबके रहस्यभरे बाणों का भेद जानने का वर माँगा तो वे उनको यह वर दे कर चले गये।

यह वर पा कर वह फिर से वशिष्ठ जी से बदला लेने के लिये उनके आश्रम पहुँच गये। वशिष्ठ जी उस समय अपनी पूजा कर रहे थे। विश्वामित्र जी ने अपने वरदान में पाये गये बहुत से बाण वशिष्ठ जी पर छोड़े। बहुत सारे ऋषि जो वहाँ पूजा कर रहे थे बाणों की यह वर्षा देख कर डर के मारे भाग गये।

वशिष्ठ जी ने अपनी आँखें खोलीं तो अपने सामने विश्वामित्र जी को एक भयानक हथियार लिये पाया। उन्होंने अपने सारे भागे हुए ऋषियों को वापस बुलाया।

उन्होंने अपना दंड जिस पर उनका हाथ रखा हुआ था उखाड़ा और विश्वामित्र जी के सामने गाड़ दिया जिसके सामने उनके सारे बाण और हथियार बेकार हो गये। इससे विश्वामित्र जी को बहुत शर्म आयी क्योंकि उनकी तो सारी तपस्या ही बेकार हो गयी थी। शिव जी का दिया हुआ कोई हथियार काम नहीं कर रहा था।

वह बोले “धिग बलम्, धिग क्षत्रिय, ब्रह्म तेजो बलम् बलम्” यानी शारीरिक बल को धिक्कार है, क्षत्रिय बल को भी धिक्कार है केवल ब्रह्म तेज का बल ही बल है।

तो इस बार विश्वामित्र जी ने फिर से तपस्या की और ब्रह्मर्षि बनने का विचार किया। इसके लिये वे अपनी रानियों के साथ दक्षिण की तरफ चले गये और 1000 साल तक तप करके ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया।

ब्रह्मा जी ने प्रसन्न हो कर उनको दर्शन दिये और राजर्षि⁴ होने का वरदान दिया पर विश्वामित्र जी का उद्देश्य तो राजर्षि बनना नहीं था। वह राजर्षि बनने से सन्तुष्ट नहीं थे वह तो ब्रह्मर्षि बनना चाहते थे सो उन्होंने अपना तप जारी रखा।

⁴ Raajarshi is a king who lives like a Rishi (sage). Seetaa Jee's father Raajaa Janak was the Raajarshi. So since Vishwaamitra Jee was a King Brahmaa Jee bestowed the boon of being Raajarshi to him.

इस बीच एक राजा सत्यव्रत सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे सो उन्होंने वशिष्ठ जी से प्रार्थना की कि वह उनको सशरीर स्वर्ग भेज दें पर वशिष्ठ जी ने उनको मना कर दिया तो वशिष्ठ जी को नीचा दिखाने के लिये विश्वामित्र जी ने राजा सत्यव्रत को सशरीर स्वर्ग पहुँचाने की कोशिश की।

वह अपने इस काम में करीब करीब सफल हो गये थे पर क्योंकि इन्द्र यह नहीं चाहते थे कि कोई आदमी सशरीर स्वर्ग में आये सो उन्होंने सत्यव्रत को स्वर्ग से नीचे धकेल दिया।

अब क्योंकि इन्द्र उनको स्वर्ग में आने नहीं दे रहे थे और विश्वामित्र जी के तप की शक्ति उनको धरती पर नहीं आने दे रही थी सो वह बीच में ही अटक गये और एक नक्षत्र बन गये।

विश्वामित्र जी ने अपनी शक्ति से उनको वहाँ हमेशा के लिये स्थित कर दिया और वह त्रिशंकु के नाम से मशहूर हो गये। विश्वामित्र जी अपनी इन्द्र पर, देवताओं पर और वशिष्ठ जी पर की इस जीत से बहुत प्रसन्न थे।

इसके बाद विश्वामित्र जी तपस्या करने के लिये पुष्कर जी⁵ चले गये। वहाँ इनको अपना भानजा देवरात⁶ मिल गया।

⁵ Pushkar Jee is a place in Rajasthaan. It is said that after travelling to Chaar Dhaam one must go to Pushkar Jee otherwise that travel is not complete.

⁶ Devaraata was the son of his sister Satyavatee who was married to Richeek Muni. They had three sons – the eldest one was Maharshi Jamadagni and Devaraata was the middle son.

अयोध्या के राजा अम्बरीष ने पुत्र पाने के लिये एक यज्ञ किया जिसमें उन्होंने माँगा कि अगर उनके एक बेटा होगा तो वह उसकी बलि दे देंगे तो यज्ञ के बाद उनके बेटा तो हुआ पर बेटे के मोह में वह उसकी बलि नहीं दे सके।

इसके लिये उन्होंने किसी और लड़के को ढूँढा तो उनको विश्वामित्र जी की बहिन का बीच का बेटा देवरात मिल गया जिसको वह अपने बेटे की जगह बलि दे सकते थे। सो वह वह रस्म करने के लिये उसको पुष्कर ले गये।

देवरात ने जब अपने मामा विश्वामित्र को देखा तो उनसे अपनी जान बचाने की प्रार्थना की। विश्वामित्र जी ने दया करके उसको एक मन्त्र बताया और कहा “जब राजा तुम्हें बलि की जगह बाँध दें तो अपनी पूरी भक्ति से यह मन्त्र पढ़ना तुम बच जाओगे।”

उसने ऐसा ही किया। उस मन्त्र का पाठ सुन कर इन्द्र बहुत खुश हुए और उसको छोड़ दिया। साथ में उन्होंने अम्बरीष के बेटे को भी छोड़ दिया। बाद में विश्वामित्र जी ने उसको अपने बेटे की तरह से गोद ले लिया। तबसे उसका नाम शुनहशेष पड़ गया।

इस तरह विश्वामित्र जी ने अपना तप जारी रखा और 1000 साल और तपस्या की। पर इस बार उनकी तपस्या से इन्द्र घबरा गया सो उसने उनका तप भंग करने के लिये अपनी सबसे सुन्दर अप्सरा मेनका को भेजा।

मेनका उनके साथ 10 साल रही। वह उनका तप भंग करने में सफल हो गयी। समय आने पर उसने विश्वामित्र की बेटी को जन्म दिया जिसको आज हम शकुन्तला के नाम से जानते हैं। जिसका विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ था। उनके पुत्र भरत के नाम पर हमारा देश भारत कहलाया।

यह सब देख कर विश्वामित्र जी ने सोचा “मैंने अपना तप क्यों छोड़ा?” और वह फिर तप करने चले गये। इस बार उन्होंने अपना गुस्सा छोड़ कर तप किया।

तप पूरा होने के बाद उन्होंने अपने लिये खाना तैयार किया और उसे खाने बैठे कि ब्राह्मण के वेश में इन्द्र उनके पास आये और उनसे खाना माँगा। उन्होंने ब्राह्मण को खाना दिया और फिर से 1000 साल के लिये तपस्या में बैठ गये।

इस बार इन्द्र ने फिर से उनकी तपस्या भंग करने की कोशिश की पर अबकी बार वह अपने इरादों नहीं डिगे। तपस्या पूरी होने पर ब्रह्मा जी फिर से उनके सामने प्रगट हुए और उनको ब्रह्मर्षि होने का वरदान दिया।

इसमें विश्वामित्र जी के ब्रह्मर्षि बनने की इच्छा की घटना तो केवल एक ही है कि जब उन्होंने देखा कि ब्रह्म तेज का बल एक क्षत्रिय के बल से कहीं ज़्यादा है तो वह राजा से ब्रह्मर्षि बनने की कोशिश में लग गये।

पर उसको पूरा करने के लिये यानी ब्रह्मर्षि बनने में उनको कितना समय लगा कितने बड़े बड़े इम्तिहान देने पड़े यह एक लम्बी कहानी है जो यहाँ थोड़े में ही दी हुई है।



2 वाल्मीकि जी

जहाँ तुमने विश्वामित्र जी की एक क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बनने की कहानी पढ़ी वैसे ही यह कहानी भी एक डाकू से एक बहुत बड़े भक्त कवि और महर्षि बनने की है।

यह महर्षि वाल्मीकि जी की कहानी है जिन्होंने संस्कृत में सबसे पहला काव्य लिखा जिसकी वजह से आज वह आदि कवि कहलाते हैं और उनका लिखा हुआ वह काव्य आदि काव्य कहलाता है। और वह आदि काव्य है रामायण।

उन्होंने ही गायत्री मन्त्र भी लिखा जो आज मन्त्रों में महामन्त्र माना जाता है।

वाल्मीकि जी का नाम पहले से ही वाल्मीकि नहीं था। उनका नाम था रत्नाकर। आओ देखते हैं कि उनका नाम वाल्मीकि कैसे पड़ा और उनके जीवन की वह कौन सी घटना थी जिसने उनकी डाकू की जिन्दगी बदल दी।

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक ब्राह्मण पति पत्नी रहते थे। उनके एक बेटा था जिसका नाम था रत्नाकर। एक बार जब पिता और बेटा पूजा के लिये फूल और हवन के लिये समिधा⁷ चुनने के लिये जंगल गये हुए थे तो दोनों बिछड़ गये।

⁷ Samidhaa are the short twigs which are use to burn in Havan (Yagya).

पिता ने बेटे को बहुत ढूँढा पर वह उसको नहीं मिला तो वह निराश हो कर घर लौट आया। उसने सोचा कि शायद किसी जंगली जानवर ने उसको खा लिया होगा या मार दिया होगा।

पर किस्मत से भील जाति के एक शिकारी को वह बच्चा मिल गया सो वह उसको अपने घर ले आया और उसको अपने बेटे की तरह पालने लगा। इस तरह से ब्राह्मण का वह बच्चा एक शिकारी के रूप में बड़ा होने लगा।

जब वह शादी के लायक हो गया तो उसके भील पिता ने उसकी शादी अपने समुदाय की एक लड़की से कर दी। फिर उसके बच्चे हो गये। इस तरह उसका परिवार हो गया।

बड़ा परिवार होने की वजह से अब वह केवल शिकार से अपने घर का गुजारा नहीं कर पाता था सो उसने जंगल में डाका डालना शुरू कर दिया। जो लोग जंगल में से हो कर आते जाते थे वह उनको पकड़ लेता लूट लेता और उस पैसे से अपना और अपने परिवार का पेट पालता।



दिन ऐसे ही गुजर रहे थे कि एक दिन नारद जी अपनी वीणा⁸ बजाते हुए उधर से गुजरे। उसने नारद जी को भी पकड़ लिया और उनसे पैसे माँगे।

⁸ Veena is an Indian string musical instrument – see its picture above.

नारद जी बोले — “अरे भाई मैं तो विष्णु का भक्त हूँ। मेरे पास इस वीणा के अलावा और कुछ नहीं है। अगर तुम्हें मेरी वीणा पसन्द हो तो इसे तुम ले लो।”

रत्नाकर बोला — “मैं इस वीणा का क्या करूँगा ओ नकली भक्त। मुझे तो पैसे चाहिये। कहाँ छिपा रखे हैं तूने पैसे। ला निकाल उन्हें और मुझे दे।”

नारद जी बोले — “मैं तुमसे सच कह रहा हूँ। मेरे पास इस वीणा के अलावा और कुछ नहीं है। पर तुम यह काम क्यों करते हो?”

रत्नाकर बोला — “लोग पैसा क्यों कमाते हैं अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिये। मैं भी यह काम इसी लिये करता हूँ।”

नारद जी बोले — “क्या तुम्हें पता है कि इस तरह से दूसरों को लूटना पाप है। तुम अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिये लोगों को लूटने की बजाय कोई और काम क्यों नहीं करते।”

रत्नाकर बोला — “मैं जानता हूँ कि यह पाप है पर मैं क्या करूँ मैं और कोई काम जानता ही नहीं।”

नारद जी बोले — “ठीक है। जिसके लिये भी तुम यह काम कर रहे हो उनसे जा कर यह पूछ कर आओ कि जैसे वह तुम्हारा पैसा बाँटते हैं वैसे ही क्या वह तुम्हारे पाप भी बाँटेंगे?”

रत्नाकर बड़े विश्वास के साथ बोला — “क्यों नहीं जब वे मेरा पैसा बाँट रहे हैं तो वे मेरे पाप भी बाँटेंगे। क्योंकि यह सब मैं उन्हीं के लिये तो कर रहा हूँ। वे मेरे अपने आदमी हैं।”

नारद जी ने उससे फिर से ज़ोर दे कर कहा — “जा कर पूछ कर तो आओ। क्योंकि मुझे लगता है कि वे तुम्हारे पाप नहीं बाँटेंगे। जाओ जा कर पूछ कर आओ और फिर मुझे आ कर बताओ।”

रत्नाकर बोला — मैं तुझ जैसे लोगों को अच्छी तरह जानता हूँ। तू मुझे यहाँ से भेज कर मेरे जाने के बाद भाग जाना चाहता है। मैं यह नहीं होने दूँगा।”

नारद जी हँसे — “नहीं मैं नहीं भागूँगा। अगर तुमको मेरे ऊपर भरोसा न हो तो तुम मुझे यहीं इस पेड़ से बाँध जाओ। जब तुम लौटोगे तो तुम मुझे यहीं पाओगे।”

रत्नाकर इस बात पर राजी हो गया। उसने नारद जी को पास के एक पेड़ से बाँधा और अपने घर गया। वहाँ जा कर उसने अपने पत्नी और बच्चों से पूछा कि क्या वे उसके साथ उसके इस पाप में भागी हैं।

पत्नी और बच्चों ने उससे कहा कि वे उसके इस पाप में भागी बिल्कुल भी नहीं हैं। रत्नाकर ने उनको समझाने की कोशिश भी की कि वह यह सब केवल उनके लिये ही तो करता है।

तो उन्होंने जवाब दिया कि यह तुम्हारा फर्ज है कि तुम हमारा पेट पालो। अब तुम हम लोगों को कैसे पालते हो तुम हमको पालने के लिये पैसा कैसे कमाते हो यह तुम जानो। हम तुम्हारे पुन्य तो बाँट सकते हैं पर पाप नहीं।

यह सुन कर तो रत्नाकर की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। उसके मुँह से तो कोई बोल ही नहीं निकला। वह सोचने लगा कि वे सब लोग कितने कृतघ्न थे। जिनके लिये वह सारी ज़िन्दगी दूसरों को लूटता रहा आज वही उसको दगा दे गये। वह वहाँ से चुपचाप नीचा सिर किये वापस चला आया।

आ कर उसने देखा कि नारद जी तो वहीं बँधे थे पर वह सो गये थे। रत्नाकर उन ऋषि से बहुत प्रभावित हुआ कि उन्होंने तो भागने की भी कोशिश नहीं की थी।

उसने उनको जगाया और कहा — “ओ भक्त तू ठीक कहता था। मेरे घर वाले जिनके लिये मैं यह सब करता था वही मेरे इस पाप के भागी नहीं बनना चाहते। पर अब मैं क्या करूँ। मैंने तो कितने सारे पाप किये हैं मेरे ये सारे पाप कैसे धुलेंगे।”

और ऐसा कह कर वह नारद जी के पैरों में गिर पड़ा और बोला — “मेहरबानी करके अब आप ही मुझे कोई तरीका बताइये ऋषिवर जिससे मैं अपने इन पापों से छुटकारा पा सकूँ।”

नारद जी प्यार से बोले — “मैं तुम्हें एक मन्त्र देता हूँ। तुम इस मन्त्र का जाप करो। इस मन्त्र के जाप से तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे। बोलो “राम राम”।”

रत्नाकर बोला — “मैं तो इतना बड़ा पापी हूँ कि मुझसे तो यह शब्द ही नहीं बोला जा रहा। मुझे और कोई तरकीब बताइये ऋषिवर। मेहरबानी करके मुझे बचाइये।”

इस पर नारद जी ने एक पल सोचा और फिर बोले — “अच्छा तो बोलो “मरा मरा”।”

रत्नाकर बोला — “हाँ यह शब्द ठीक है मेरे लिये।”

नारद जी फिर बोले — “ठीक है। अब जब तक मैं वापस आता हूँ तुम इस मन्त्र का जाप करो। मैं फिर आ कर तुमसे मिलता हूँ।”

इतना कह कर नारद जी तो चले गये और रत्नाकर एक पेड़ के नीचे बैठ कर इस मन्त्र का जाप करने लगा।

नारद जी वहाँ से जाने के बाद वहाँ बहुत दिनों तक वापस नहीं आये। उधर रत्नाकर उस मन्त्र के जाप में इतना मग्न हुआ कि वह भी वहाँ से उठा नहीं। दीमक⁹ ने उसके शरीर पर अपना घर बना लिया।

बहुत समय बाद नारद जी वहाँ आये तो रत्नाकर उनको वहाँ कहीं दिखायी नहीं दिया। पर वहाँ दीमक का एक घर खड़ा था

⁹ White ants or termites

और रत्नाकर का शरीर सोने की तरह उस घर में से चमक रहा था सो नारद जी ने उस घर को तोड़ दिया और रत्नाकर को बाहर निकाला ।

दीमक के इस घर को संस्कृत में वल्मीकि कहते हैं तो नारद जी ने रत्नाकर को वाल्मीकि का नाम दे दिया । ये ही वाल्मीकि जी आगे चल कर संस्कृत के पहले कवि हुए जिन्होंने वाल्मीकि रामायण लिखी ।

इन्होंने ही जब राम ने सीता को बनवास दे दिया था तो सीता को अपने आश्रम में ठहराया । इन्हीं के आश्रम में राम के दोनों बेटे लव और कुश पैदा हुए । इन्होंने अपनी लिखी हुई रामायण उन दोनों बच्चों को सिखायी और फिर उन्होंने उसको अपने पिता को सुनायी ।

इस तरह से एक छोटी सी घटना ने रत्नाकर डाकू को राम का भक्त और आदि कवि वाल्मीकि बना दिया ।



3 महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध का नाम तो तुम सबने सुना ही होगा। इन्हीं के नाम पर बौद्ध धर्म चलता है। इनका जन्म ईसा से 500 साल पहले हुआ था। ये 80 साल तक ज़िन्दा रहे।

ये भी महात्मा बुद्ध ऐसे ही नहीं बन गये। इनके जीवन में घटी केवल एक दिन की घटना ने इनको महात्मा बुद्ध बना दिया।

ये राजा शुद्धोदन के बेटे थे। राजा शुद्धोदन की राजधानी कपिलवस्तु थी जो उस समय उत्तरी बिहार में थी।

कहते हैं कि इनके जन्म के पहले इनकी माँ को कई ऐसे सपने आये थे जिनसे उनको पता चल गया था कि उनको कोई देवी सन्तान पैदा होने वाली है।

जब ये पैदा हुए तो इनके पिता राजा शुद्धोदन ने इनको सिद्धार्थ नाम दिया। इनका जन्म क्योंकि क्षत्रिय जाति की शाक्य शाखा में हुआ था इसलिये इनको शाक्य मुनि भी कहा जाता है। ज्ञान मिल जाने के बाद ही ये गौतम बुद्ध कहलाये।

जन्म के बाद इनके पिता ने इनका भविष्य जानने के लिये कुछ ज्योतिषियों को बुलाया था। कहते हैं कि इनके जन्म दिन पर आठ ज्योतिषी आये थे। उनसे जब इनके भविष्य के बारे में पूछा गया तो सात ज्योतिषियों ने तो कहा कि या तो यह बच्चा चक्रवर्ती राजा बनेगा या फिर चक्रवर्ती सन्त।

इन आठ ज्योतिषियों में से एक ज्योतिषी कोदन्ना¹⁰ भी थे। उन्होंने कहा “नहीं राजन आप इसमें से राजा शब्द निकाल दें। यह बच्चा केवल चक्रवर्ती सन्त ही बनेगा चक्रवर्ती राजा नहीं।”

जब राजा ने कोदन्ना की भविष्यवाणी सुनी तो वह तो बहुत उदास और दुखी हो गये और गहरे विचारों डूब गये कि उनका अकेला बेटा राज्य छोड़ कर चला जायेगा।

बहुत सोच विचार कर उन्होंने बच्चे को संसार के सारे दुखों से दूर रखने की सोची ताकि उसका मन संसार से ही न हट जाये और वह उनका राजपाट छोड़ कर संत बन जाये। उसके लिये उन्होंने महल में ही सब सुख सुविधाओं और आराम के साधन जुटा दिये।

पहली बात तो उस बच्चे को महल के बाहर जाने ही नहीं दिया जाता था और अगर जाने भी दिया जाता तो इस बात का खास ध्यान रखा जाता कि बाहर उसको कोई दर्द भरी घटना न दिखायी दे जिससे उसका मन संसार से हट जाये।

इस तरह से काफी समय गुजर गया। जब सिद्धार्थ 24 साल के हो गये तो उनकी शादी यशोधरा के साथ कर दी गयी। इस तरह कई साल तक सिद्धार्थ ने बहुत ही आरामदेह ज़िन्दगी गुजारी। फिर उनको एक बेटा हुआ जिसका नाम रखा गया राहुल।

¹⁰ Kodanna – one of the eight astrologers who came on the occasion of Gautam Buddha's birthday to predict his future.

पर जो कुछ भाग्य में लिखा है उसे कौन टाल सकता है। एक दिन ऐसा आया...

एक बार सिद्धार्थ की इच्छा कहीं दूर घूमने की हुई तो उन्होंने अपने नौकरों से कहा कि वे उनको कहीं दूर घुमाने के लिये ले चलें। तो रास्ते में उन्होंने उस दिन जो कुछ देखा उसने तो उनकी ज़िन्दगी ही बदल दी।

सबसे पहले उन्होंने एक कोढ़ी आदमी देखा। उसके सारे शरीर पर घाव से हो रहे थे। उन्होंने अपने नौकरों से पूछा कि इस आदमी को क्या हुआ है। यह ऐसा क्यों दिखायी देता है। उन्होंने उनको बताया कि यह आदमी बीमार है।

सिद्धार्थ ने पूछा — “यह बीमारी क्या होती है?”

नौकरों ने कहा — “राजकुमार, यह तो शरीर है। बीमारियाँ तो इसे लगती ही रहती हैं। इसमें शरीर का कभी कोई अंग खराब होता है तो कभी कोई।”

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर चिन्ता में पड़ गये।

आगे चले तो उन्होंने एक बूढ़ा देखा जिसके शरीर पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, उसकी कमर झुकी हुई थी और वह लाठी के सहारे भी बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था।

सिद्धार्थ ने अपने नौकरों से पूछा — “इस आदमी को क्या हुआ?”

नौकरों ने कहा — “राजकुमार, यह बुढ़ापा है। भगवान जिसको लम्बी उमर देता है तो वह बूढ़ा तो होता ही है।”

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर फिर चिन्ता में पड़ गये।

और आगे चले तो उन्होंने एक मरा हुआ आदमी देखा जिसकी अरथी को चार लोग अपने कन्धों पर शमशान लिये जा रहे थे। उसके पीछे पीछे लोग रोते हुए चले जा रहे थे।

सिद्धार्थ ने उसको देख कर पूछा — “ये चार आदमी किसको उठा कर लिये जा रहे हैं? और इसके पीछे पीछे जाने वाले लोग रो क्यों रहे हैं?”

नौकरों ने बताया कि यह आदमी मर गया है और ये लोग इसको शमशान लिये जा रहे हैं इसका अन्तिम संस्कार करने के लिये।

राजकुमार सिद्धार्थ ने फिर पूछा — “यह मरना क्या होता है और यह आदमी क्यों मर गया?”

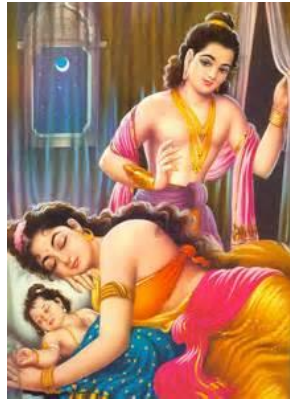
नौकर बोले — “राजकुमार मौत तो हर आदमी को आती है। जो इस दुनियाँ में आया है वह एक दिन जायेगा भी जरूर। अब क्योंकि यह चला गया और ये लोग इसको फिर कभी नहीं देख पायेंगे इसलिये ये लोग इसके पीछे पीछे रोते जा रहे हैं।”

उन्होंने राजकुमार सिद्धार्थ को गरीबी और दुख के बारे में और भी बहुत कुछ बताया। राजकुमार सिद्धार्थ का मन यह सब देख सुन कर बहुत खिन्न हो गया। उन्होंने नौकरों से तुरन्त ही घर वापस चलने के लिये कहा।

घर आ कर वह बहुत परेशान हो गये। कई सवाल उनके दिमाग में घूमने लगे — “इस धरती पर जीने का क्या मतलब है?” “यह ज़िन्दगी केवल यहाँ आनन्द मनाने के लिये ही नहीं है इसका कुछ और भी मतलब है। वह मतलब क्या है।” आदि आदि।

सोचते सोचते वह इतना परेशान हुए कि एक दिन वह अपने नन्हें से बच्चे राहुल और पत्नी यशोधरा को रात में अकेला सोते हुए छोड़ कर घोड़े पर सवार हो कर महल से चले गये। और फिर कभी वापस नहीं आये।

यही उनकी ज़िन्दगी की वह घटना थी जिसने उनको सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध बना दिया।



4 सम्राट चन्द्रगुप्त

सम्राट चन्द्रगुप्त भारत का पहला हिन्दू राजा था और यह करीब करीब ईसा से 350 साल पहले हुआ था।

बच्चों तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि यह न तो किसी राजा का बेटा था और न ही किसी राजा के दरबारी का बेटा था जो इसको राजा बनने के योग्य बनाता यह केवल अपने बल बूते पर ही राजा बना था।

कैसे इसके जीवन की केवल एक घटना ने इसको यहाँ तक पहुँचा दिया और यह आज भी एक बहुत मशहूर राजा के नाम से जाना जाता है और फिर बाद में सम्राट के नाम से।

यह एक घटना इसके जीवन की ऐसी कोई बहुत लम्बी घटना नहीं है जिसका वर्णन बहुत सारी जगह ले ले पर हाँ है तो यह घटना ही न जिसने उसकी जिन्दगी बदल दी। बस किसी की नजर की बात है। अगर यह घटना न होती तो वह बच्चा आज का चन्द्रगुप्त न होता।

यह उन दिनों की बात है जब पाटलिपुत्र यानी आज की पटना में नन्द वंश के आखिरी राजा धनानन्द राजा थे - ईसा से करीब 350 साल पहले। पाटलिपुत्र में एक चनक भी रहा करते थे जिनके एक बेटा था जिसका नाम था विष्णुगुप्त। चनक का बेटा होने की वजह से इसका नाम चाणक्य पड़ गया।

एक बार राजा धनानन्द ने ब्राह्मणों को खाना खिलाया तो उसमें चाणक्य भी गये। चाणक्य की शकल देख कर राजा नन्द बहुत नाराज हुए और उन्होंने उनको उनकी चोटी पकड़ कर धक्के मार कर बाहर निकलवा दिया।

अब यह चोटी कोई ऐसी वैसी तो थी नहीं एक ब्राह्मण की चोटी थी। और किसी ऐसे जैसे ब्राह्मण की चोटी भी नहीं थी यह थी चाणक्य की चोटी।

इस चोटी पकड़ कर बाहर निकालने में चाणक्य की चोटी खुल गयी और चाणक्य ने प्रतिज्ञा की कि वह अपनी चोटी तब तक नहीं बाँधेंगे जब तक राजा धनानन्द को राजगद्दी से हटा कर किसी अच्छे राजा को नहीं बिठा देंगे।

बस इसी प्रतिज्ञा और खुली चोटी के साथ चाणक्य एक अच्छे राजा के उम्मीदवार की तलाश में इधर उधर घूमने लगे।

एक बार जब वह इस तलाश में इधर उधर घूम रहे थे तो उन्होंने कुछ बच्चों को राजा और उसकी प्रजा का खेल खेलते देखा। कौतूहलवश वह वहाँ रुक गये और उन बच्चों का खेल देखने लगे।

उस समय बालक चन्द्रगुप्त राजा बना हुआ था और न्याय कर रहा था। चाणक्य को उसके न्याय करने का ढंग बहुत पसन्द आया और उसने उसमें भविष्य में बनने वाले राजा की एक झलक देखी।

वह उसकी माँ के पास गये और उसको उससे 1000 सोने के सिक्के दे कर माँग लिया। उसको पढ़ाया लिखाया। राजकुमारों जैसी शिक्षा दी। और बड़ा करके उसको पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर बिठा दिया।

इस तरह चाणक्य के अपमान की एक घटना ने और इस लड़के के खेल ने इस बच्चे की ज़िन्दगी पलट दी। सड़क पर राजा का खेल खेलने वाला यह बच्चा केवल राजा ही नहीं बल्कि पूरे भारत का सम्राट बन गया।

न राजा धनानन्द के दरबार में चाणक्य का अपमान हुआ होता। न वह कोई प्रतिज्ञा करता। न वह किसी राजा की खोज में निकलता। न उस समय चन्द्रगुप्त सड़क पर राजा और प्रजा का खेल खेल रहा होता।

न चाणक्य ने उसको देखा होता। न उसको उसका न्याय पसन्द आया होता। न उसमें उसको एक होनहार भावी राजा की झलक दिखायी पड़ती और न वह उसको सड़क पर से उठा कर भारत का सम्राट बनाता।

इस तरह इन सब घटनाओं ने मिल कर चन्द्रगुप्त की ज़िन्दगी बदल दी और भारत का भविष्य।

5 महाकवि कालीदास

महाकवि कालीदास का नाम तो तुमने सुना ही होगा। ये भारत के एक बहुत बड़े कवि हो गये हैं। इन्होंने संस्कृत के कई उपन्यास और कविताएँ लिखी हैं।

इनका सबसे ज़्यादा मशहूर उपन्यास है शकुन्तला या फिर संस्कृत में “अभिज्ञान शाकुन्तलम्”। इनके दूसरे काव्यों में हैं मेघदूत और रघुवंश।

बच्चों आज जैसा हम इन्हें जानते हैं यानी एक महाकवि के रूप में तो शुरू से ही ये इतने बड़े कवि नहीं थे। इनके इतने बड़े कवि बनने की भी एक कहानी है।

कहते हैं न कि किसी पुरुष के बड़े होने में किसी न किसी स्त्री का हाथ होता है। ऐसा ही मामला कुछ यहाँ भी था। तो आओ पढ़ते हैं कि वह स्त्री कौन थी जिसने इनको इतना बड़ा कवि बना दिया जो इतने पुराने होते हुए भी आज भी भारत के महाकवि कहे जाते हैं।

इनके बचपन के बारे में तो कुछ ज़्यादा नहीं मिलता सिवाय इसके कि जब ये छह महीने के थे तो इनके माता पिता का देहान्त हो गया था। एक चरवाहे ने इनको पाला पोसा इसलिये इनकी पढ़ाई लिखायी नहीं हो पायी।

एक बार की बात है कि भारत में काशी में एक राजा राज करते थे जिनका नाम था भीमशुक्ल । उनकी एक बहुत ही विद्वान बेटी थी जिसका नाम था विद्युतमा¹¹ । वह इतनी विद्वान थी कि उस राजा के राज्य में उसके बराबर का कोई भी विद्वान नहीं था ।

उसने कह रखा था कि वह केवल उसी से शादी करेगी जो उसको शास्त्रार्थ¹² में हरा देगा । पर राजा भीमशुक्ल चाहते थे कि उसकी शादी महान विद्वान वररुचि¹³ से हो ।

वररुचि भी उस समय के बहुत बड़े विद्वान थे । पर उसने अपने पिता से उससे शादी करने से इसलिये मना कर दिया कि वह तो खुद ही उनसे कहीं ज़्यादा विद्वान थी ।

अब यह तो वररुचि की सीधी सीधी बेइज़्जती थी । सो वररुचि ने उसको एक ऐसी सीख देने की ठानी जिसको वह ज़िन्दगी भर याद रखे ।¹⁴

बहुत सारे संत, विद्यार्थी, विद्वान, पंडित उससे शादी करने की इच्छा से उसके पास आये पर कोई उसको शास्त्रार्थ में नहीं हरा सका ।

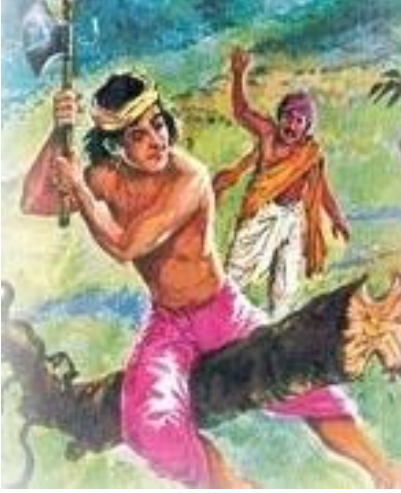
कुछ समय बाद उन हारे हुए लोगों ने उससे इस बात का बदला लेने की सोची । पर अब उससे बदला कैसे लिया जाये ।

¹¹ Bheemshukla – name of the King of Kashi, UP, India. He had a very intelligent daughter Vidyotamaa.

¹² Means debate on spiritual matters

¹³ Vararuchi was a literary man in Vikramaaditya's court. The great poet Kalidas was also the great poet in the same court.

¹⁴ Somewhere Vararuchi's name is mentioned as her suitor and revenger, but somewhere only as the planner of this event along with those suitors who got defeated from Vidyotamaa.



क्योंकि वह खुद बहुत विद्वान थी तो इन सबने सोचा कि हम उसकी शादी किसी बहुत बड़े बेवकूफ से करा देते हैं तो उसका अपने विद्वान होने का घमंड टूट जायेगा।

ढूँढते ढूँढते इनको एक ऐसा आदमी मिल गया जो एक पेड़ पर बैठा हुआ लकड़ी काट

रहा था।

अब लकड़ी काटना तो कोई बेवकूफी की बात नहीं थी पर मजे की बात यह थी कि वह जिस डाल पर बैठा था उसी डाल को काट रहा था। यानी जैसे ही वह डाल कटती वह आदमी भी उस डाल के साथ साथ नीचे गिर जाता।

बस उनकी समझ में आ गया कि इससे बड़ा बेवकूफ हमको कोई और नहीं मिल सकता। जो आदमी अपने सहारे को नुकसान पहुँचा रहा हो उससे बड़ा बेवकूफ और कौन हो सकता है।

यह सोच कर उन्होंने उसको नीचे उतारा और कहा कि अगर वह उनका कहा मानेगा तो वे उसको इतना अमीर बना देंगे कि फिर उसको ज़िन्दगी भर कोई काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि हम तुमको एक राजा के महल ले कर चलते हैं जहाँ तुमको बहुत अच्छा खाना मिलेगा पर वहाँ तुमको एक शब्द भी बोलना नहीं है केवल हाथ के इशारों से ही बात करनी है।

सो वे उसको राजा के महल ले कर आये और राजा से बोले —
 “महाराज संयोग से हमको एक बहुत बड़े विद्वान मिल गये हैं जो
 आपकी बेटी को शास्त्रार्थ में चुनौती देते हैं। यह एक संत हैं और
 यह अभी तप में हैं इसलिये बोलेंगे नहीं हाँ केवल हाथ के इशारों से
 ही बात करेंगे शास्त्रार्थ करेंगे।”

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम आज कोई
 तो मुझे ऐसा आदमी मिला जो मेरी बेटी को चुनौती दे कर उसे
 हराना चाहता है। मुझे तो लगता था कि मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह
 जायेगी।

सो उस लकड़हारे को राजकुमारी विद्युतमा के सामने लाया
 गया। उसको यह भी बता दिया गया कि यह आदमी केवल इशारों
 से ही बात करके आपसे शास्त्रार्थ करेगा।

विद्युतमा को यह सुन कर कुछ अजीब सा तो लगा पर फिर वह
 मान गयी। विद्युतमा ने अपने दाँये हाथ की एक उँगली उठा कर
 उसके सामने की तो उस बेवकूफ ने सोचा कि यह शायद मेरी एक
 आँख फोड़ना चाहती है तो क्यों न मैं इसकी दोनों आँखें फोड़ दूँ यह
 सोच कर उसने तुरन्त ही उसकी तरफ दो उँगलियाँ उठा दीं।

विद्युतमा ने कहा कि मैंने एक उँगली यह कहने के लिये उठायी
 कि ईश्वर एक है और उसी एक ने यह दुनियाँ बनायी है। अब
 आप इनके दो उँगलियाँ उठाने का मतलब समझाइये।

तो वहाँ बैठे लोगों ने उसके दो उँगलियों के उठाने का यह मतलब समझाया कि वह आदमी यह कहना चाहता है कि मैं द्वैतवाद में विश्वास करता हूँ यानी ईश्वर और आत्मा दो को मानता हूँ जिसमें आत्मा ईश्वर का अंश है और ईश्वर ने यह दुनियाँ अकेले नहीं बनायी बल्कि अपनी माया के साथ मिल कर बनायी है।

हालाँकि विद्युतमा को उनकी यह दलील कुछ ज़्यादा जँची तो नहीं पर फिर भी वह चुप हो गयी।

फिर उसने उसको अपनी खुली हुई हथेली दिखायी जिससे वह उसको यह बताना चाहती थी कि प्रकृति में पाँच चीज़ें हैं। उस बेवकूफ ने सोचा कि अगर यह मुझे थप्पड़ मारना चाहती है तो क्यों न मैं इसे घूसा मार दूँ सो उसने उसको अपनी बन्द मुठी दिखा दी।

पूछने पर उस आदमी के दोस्तों ने जवाब दिया कि यह कहता है कि प्रकृति में पाँच चीज़ें जरूर हैं पर ये केवल पाँच चीज़ें ही नहीं हैं उनमें उनके पाँच विषय¹⁵ भी हैं।

विद्युतमा इस बात से बहुत प्रभावित हो गयी सो उसने अपनी हार मान ली और उससे शादी कर ली।

शादी के बाद विद्युतमा को पता चला कि उसका पति तो बिल्कुल ही अनपढ़ गँवार और बेवकूफ है तो वह बहुत झल्लायी और नाराज हुई।

¹⁵ Five Indriyaan (senses) are eyes, ears, nose, mouth, tongue and their five subjects are seeing, hearing, smelling, speaking and taste respectively.

उसने उसकी बेइज्जती करके उसको यह कह कर घर के बाहर निकाल दिया कि तुम्हारे दिमाग में तो कीचड़ और पत्थर भरे हैं। जाओ और जब तक तुम पढ़ लिख कर मुझसे बात करने के लायक न हो जाओ तब तक मेरे पास नहीं आना।

अब वह बेवकूफ बेचारा क्या करे। वह बहुत परेशान हुआ तो इधर उधर घूमने लगा। घूमते घूमते वह एक नदी के किनारे आ गया। वहाँ उसने आत्महत्या करने की सोची कि तभी उसने देखा कि कुछ स्त्रियाँ नदी पर कपड़े धो रही हैं।

उसके दिमाग में राजकुमारी विद्योतमा के दो शब्द घूम गये – कीचड़ और पत्थर। उसने देखा कि वह पत्थर जिस पर स्त्रियाँ अपने कपड़े पीट पीट कर धो रही थीं वे बहुत ही चिकने और गोल थे जबकि दूसरे पत्थर बहुत ही खुरदरे थे।

बस उसके दिमाग में यह बात घूम गयी कि जब कपड़े पीटने से एक पत्थर गोल और चिकना हो सकता है तो उसका यह कीचड़ और पत्थर भरा दिमाग शिक्षा से क्यों नहीं बदल सकता।

उसने प्रण किया कि वह भी देश का सबसे विद्वान आदमी बनेगा। और वह वहाँ से गुरु की तलाश में जंगल की तरफ चल पड़ा। बहुत कम खाना खाते हुए बहुत दिन चलने के बाद उसको एक योगी मिला जो एक बरगद के पेड़¹⁶ के नीचे बैठा था।

¹⁶ Translated for the words “Banyan Tree”

वह उस योगी के पैरों में पड़ गया औ उससे उसका आशीर्वाद माँगा । योगी बहुत दयालु था । उसने उसको फल खाने के लिये दिये । फिर उसने उसे काली देवी का एक मन्त्र दिया और उससे उस मन्त्र का दिन रात काली के मन्दिर में अकेले जाप करने के लिये कहा ।

लकड़हारे ने ऐसा किया तो एक रात काली देवी ने उसको अपने सबसे भयानक रूप में उसको दर्शन दिये । लकड़हारा डर गया और डर के मारे उसने मन्दिर का दरवाजा बन्द कर दिया ।

काली देवी ने उससे मन्दिर का दरवाजा खोलने के लिये कहा तो उस आदमी ने कहा — “माँ मैं आपको यहाँ तभी घुसने दूँगा जब आप मुझे विद्वान होने का वरदान देंगीं ।

काली देवी उसकी सादगी और भक्ति से बहुत प्रसन्न हुई और उसको बहुत बड़ा कवि होने का वरदान दिया । उसी समय से वह विद्वान हो गया और काली के नाम पर उसने अपना नाम कालीदास रख लिया ।

इसका एक दूसरा वृत्तान्त यह भी कहा जाता है कि —

विद्युतमा के घर से निकाले जाने के बाद वह उज्जैन के गढ़कलिका के मन्दिर की तरफ चला गया और वहाँ की देवी से विद्या और ज्ञान देने की प्रार्थना की । इसके लिये उसने देवी को अपनी जीभ की बलि भी दी ।

जब वह अपनी जीभ की बलि देने वाला था तो देवी उसके सामने प्रगट हुई और उसको अपनी जीभ की बलि देने से रोका और उसको विद्या और ज्ञान का आशीर्वाद दिया।

उस आशीर्वाद के फलस्वरूप उसके मुँह से अक्लमन्दी के शब्द निकलने लगे। उसने संस्कृत में लिखना और कविता करना शुरू कर दिया।

कुछ समय गुजर जाने के बाद वह अपनी पत्नी के पास गया। वहाँ जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो विद्योतमा ने संस्कृत में उससे पूछा “कौन है?”

तो कालीदास ने शुद्ध संस्कृत में ही उसको जवाब दिया — “मैं हूँ तुम्हारा पति। दरवाजा खोलो।”

पहले तो विद्योतमा को लगा कि इतनी शुद्ध संस्कृत में उससे कौन बात कर रहा है पर फिर वह अपने पति की आवाज पहचान गयी और बहुत खुश हो कर उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उसको अन्दर बुलाया। दोनों फिर बहुत खुश खुश रहे।

तो यह थी कालीदास के जीवन की वह घटना जिसने उसको एक ऐसे बेवकूफ लकड़हारे से जो जिस डाली पर बैठा था उसी डाली को काट रहा था “सारे समय का महाकवि”¹⁷ बना दिया।

¹⁷ Great Poet of All Time.

6 राजा भर्तृहरि

यह कहानी एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसने बहुत कुछ तो नहीं लिखा पर जो कुछ लिखा वह इतना अच्छा लिखा कि उसकी वजह से यह बहुत मशहूर हो गया।

और जो कुछ लिखा वह अपने मन की एक ऐसी खास हालत में लिखा कि अगर वह घटना न होती जिसकी वजह से उसके मन की यह हालत हुई तो वह शायद उनकी रचना ही न करता।

इसकी यह लिखाई भी इसके जीवन की कुछ खास घटनाओं पर आधारित है।

इसकी पुस्तकों की हम महाभारत में पायी जाने वाली भगवद् गीता से तुलना कर सकते हैं। जैसे महर्षि वेद व्यास जी ने भगवद् गीता अर्जुन के मन की एक खास हालत के लिये लिखी उसी तरह इस आदमी ने भी ये किताबें अपने मन की एक खास हालत में लिखीं।

अगर उसके मन की हालत वैसी न होती तो शायद उसने इन किताबों की रचना ही न की होती। तो आज जो हम उसकी ये किताबें पढ़ते हैं वह हमको पढ़ने को ही नहीं मिलतीं। और उसके मन की ये खास हालतें उसके जीवन की घटनाओं का परिणाम हैं। तो आओ देखते हैं कि उसके जीवन की वे खास घटनाएँ क्या थीं।

इस आदमी का नाम था राजा भर्तृहरि। कौन थे ये राजा भर्तृहरि? किस समय के थे? और कहाँ के थे? और कौन सी घटना ने इनकी ज़िन्दगी किस तरह बदल दी?

राजा भर्तृहरि के लिखे हुए तीन शतक¹⁸ मशहूर हैं – नीति शतक, श्रंगार शतक और वैराग्य शतक। इनमें संस्कृत में चार चार लाइनों के 100-100 पद्य हैं इसी लिये इनको शतक का नाम दिया गया है।

ये शतक ऐसे ही नहीं लिखे गये और न इनके नाम भी ऐसे ही रखे गये हैं बल्कि इनके लिखने की भी वजह थी और इनके नाम भी उनके मन की हालत के अनुरूप ही रखे गये।

आज हम तुम्हें इन तीनों शतकों के लिखने की वजह और भर्तृहरि के मन की हालत के बारे में बता रहे हैं कि किन हालात ने उनका जीवन बदला और किन हालात में उन्होंने ये शतक लिखे।

राजा विक्रमादित्य का नाम तो तुम सबने सुना ही होगा। उनकी विक्रम बेताल की कहानियाँ भी पढ़ी होंगी। राजा विक्रमादित्य उज्जैन के राजा थे और इनका राजकाल ईसा से पहले वाली सदी में बताया जाता है। भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे।

पिता गन्धर्वसेन की मृत्यु के बाद उनके सबसे बड़े बेटे शंक को राजा बना दिया गया पर विक्रमादित्य ने उसको मार दिया।

¹⁸ Shatak means 100. All these Shatak contain 100 4-line verses in Sanskrit language.

राजा भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे सो शंक के बाद भर्तृहरि को राजा बना दिया गया। इनको उज्जैन का राज्य देवताओं के राजा इन्द्र और धारा नगरी के राजा से विरासत में मिला था।

एक बार राजा भर्तृहरि को पता चला कि उनके राज्य में चोर डाकू और जंगली जानवरों का जोर कुछ ज़रा ज़्यादा ही बढ़ गया है सो वह खुद उन सबसे निपटने के लिये जंगल चले गये।

जब वे जंगल से लौट रहे थे तो रास्ते में उनको एक बहुत सुन्दर लड़की मिली। भर्तृहरि उसकी तरफ आकर्षित हो गये और उसको अपनी रानी बना कर घर ले आये। उस लड़की का नाम था पिंगला।¹⁹

उससे प्यार के लिये समय निकालने के लिये उन्होंने लड़ाई की देखभाल करने के लिये अपना एक आदमी तैनात किया हुआ था। उसका नाम था महीपाल।

पिंगला से शादी करने के बाद भर्तृहरि उस समय उसके प्यार में इतने ज़्यादा डूबे हुए थे कि वह खुद उसकी सुन्दरता का गुलाम बन कर रह गये थे और उनका प्यार पिंगला के लिये एक बन्धन बन गया था। सो कुछ दिन तक तो सब ठीक चला पर फिर वह महीपाल की तरफ आकर्षित हो गयी।

तीनों खुश थे कि एक दिन...

¹⁹ Kalidas, one of the nine gems of Vikramaditya's court, says that her name was nangsenaa,

उज्जयिनी में राजमहल के पास ही एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे अपने दिन बहुत ही गरीबी में गुजार रहे थे कि एक दिन उस ब्राह्मण को कल्प वृक्ष का एक फल मिल गया।

ब्राह्मण ने सोचा कि वह उस फल को राजा को दे कर कुछ धन ले लेगा जिससे उसकी गरीबी दूर हो जायेगी सो वह उस फल को राजा भर्तृहरि के पास ले गया और उसके गुण बता कर उसको दे दिया।²⁰

राजा भर्तृहरि ने उससे वह फल ले लिया और उसको उस फल के बदले में जितना सोना वह ले जा सकता था दे दिया। राजा भर्तृहरि ने वह फल अपनी सबसे प्रिय रानी पिंगला²¹ को दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान बनी रहे।

रानी ने एक बार कहा भी कि या तो इसे तुम खा लो या फिर हम दोनों मिल कर इसको खाते हैं पर राजा भर्तृहरि बोले कि वह फल केवल एक आदमी लिये ही था इसलिये उसको वही खा ले।

अब रानी पिंगला तो राजा के सेनापति महीपाल को प्यार करती थी सो राजा भर्तृहरि के जाने के बाद पिंगला ने महीपाल को बुलाया और वह फल उसको दे दिया ताकि उसका प्रेमी हमेशा सुन्दर और जवान रह सके।

²⁰ Some say that Guru Gorakhnath Ji came in his kingdom and gave him a fruit to feed his queen so that she will always remain young and beautiful, not the Braahman.

²¹ According to the poet Kalidas her name was Anangsenaa

उधर महीपाल एक लखा नाम की वेश्या के पास जाया करता था सो उस फल के गुण उसको बता कर उसने वह फल उसको दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान रहे ।

लखा ने सोचा कि यह फल तो राजा के खाने के काबिल है मैं इसको खा कर क्या करूँगी । मैं तो वेश्या हूँ मेरी तो ज़िन्दगी ही बेकार है सो वह फल उसने राजा भर्तृहरि को दे दिया ।

जैसे ही राजा ने फल की तरफ देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गये । उसने लखा से पूछा कि वह फल उसको कहाँ से मिला । उसने उसको बताया कि वह फल उसको उनके सेनापति ने दिया ।

राजा ने तुरन्त ही सेनापति को बुलवाया और उससे पूछा कि उसको वह फल कहाँ से मिला । सेनापति पहले तो घबरा गया पर फिर उसने बताया कि वह फल उसको रानी पिंगला ने दिया ।

यह सुन कर राजा को धन और प्रेम दोनों ही बेकार लगे । उसने दुनियाँ छोड़ने का विचार कर लिया पर जाने से पहले रानी से एक बार मिलना ठीक समझा ।

उसने रानी से पूछा तुमने उस फल का क्या किया जो मैंने तुम्हें खाने के लिये दिया था । रानी को किसी बात का कुछ पता नहीं था सो वह बोली “मैंने तो वह फल खा लिया ।”

इस पर उसने रानी को वह फल दिखा कर कहा “पर यह तो मेरे पास है ।” यह सुन कर रानी के मुँह से तो एक शब्द भी नहीं

निकला। राजा भर्तृहरि ने उसी समय रानी को मरवा दिया और वह फल धो कर खा लिया।

पिंगला को मरवाने के बाद राजा भर्तृहरि को यह सारा संसार सारहीन लगा और उसके बाद बिना किसी से बात किये अपना राजपाट अपने छोटे भाई विक्रम को दे कर सन्यासी बन गये।

तीन शतकों की रचना

राजा भर्तृहरि ने तीन शतकों की रचना की है - नीति शतक, श्रंगार शतक और वैराग्य शतक।

जब वह राजा बने तो उन्होंने राजा के कर्तव्यों और राजनीति पर नीति शतक लिखा।

बाद में वह पिंगला को अपनी रानी बना कर महल ले आये। पिंगला बहुत सुन्दर थी इसलिये राजा भर्तृहरि उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी ओर वह इतने अधिक आकर्षित थे कि उसके प्रेम में पड़ कर उन्होंने “श्रंगार शतक” की रचना की।

इस शतक में उनके पिंगला से अलग होने पर उनके मानसिक रूप से उससे अथाह प्रेम की झलक मिलती है। कहते हैं कि यह शतक उन्होंने हिमालय की तराई में बैठ कर लिखा था।

राजा भर्तृहरि पिंगला की बेवफाई की घटना से इतने दुखी हो गये कि उनका मन संसार से हट गया तो आखीर में उन्होंने “वैराग्य शतक” की रचना की।

इन सारे शतकों में उन्होंने चार चार लाइन के 100 श्लोक लिखे हैं।

इस तरह इन तीन मनोवस्थाओं में उन्होंने तीन शतकों की रचना की जो आज भी संस्कृत भाषा की तीन बहुत ही उत्कृष्ट रचनाएँ मानी जाती हैं।

तो राजा भर्तृहरि के जीवन की ये कुछ ऐसी घटनाएँ थीं जिन्होंने उनको इन तीन रचनाओं का रचयिता बना दिया और इतना मशहूर कर दिया।

7 संत तुलसी दास

तुलसी दास जी का नाम कौन नहीं जानता। इनकी लिखी रामायण या राम चरित मानस उत्तर भारत के हिन्दी पढ़े जाने वाले घर घर में पढ़ी जाती है।

ये राम के इतने बड़े भक्त थे कि भगवान श्रीराम ने इनको अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में दर्शन दिये थे। इनकी उम्र भी बहुत थी ये 123 साल तक ज़िन्दा रहे।

इन्होंने केवल श्रीराम के बारे में ही लिखा है। वैसे तो इन्होंने श्रीराम के बारे में कई पुस्तकें लिखी हैं पर इनकी लिखी हुई सारी पुस्तकों में इनकी रामचरित मानस और हनुमान जी के बारे में लिखी हुई हनुमान चालीसा सबसे ज़्यादा मशहूर हैं और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाती हैं।

यहाँ तक ये कैसे पहुँचे आज हम तुम्हें यही बताने जा रहे हैं। कहते हैं न कि किसी पुरुष के बड़े होने में किसी न किसी स्त्री का हाथ होता है। ऐसा ही कुछ मामला यहाँ भी था।

तो आओ पढ़ते हैं कि वह स्त्री कौन थी जिसने इनको इतना बड़ा राम का भक्त और भारत का महाकवि बना दिया जिनकी रामचरित मानस और हनुमान चालीसा आज भी हिन्दी भारत के घर घर में पढ़े सुने जाते हैं।

जब ये पैदा हुए थे तब इनके पिता ने इनका नाम रामबोला रखा था क्योंकि जन्मते ही इनके मुँह से राम शब्द निकला था।

जब ये बड़े हो गये तो इनके माता पिता ने एक अच्छे से घर की एक अच्छी सी लड़की देख कर इनकी शादी कर दी। ये अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। उसको कहीं इधर उधर नहीं जाने देते थे।

एक बार इनकी पत्नी को किसी काम से अपने मायके जाना पड़ा तो दो चार दिन तो ठीक रहा पर फिर इनको उसकी याद सताने लगी। सो इन्होंने उससे मिलने का विचार किया और चल दिये उससे मिलने।

इनके और उसके गाँव के बीच में एक नदी पड़ती थी। उन दिनों बरसात के दिन थे सो नदी खूब चढ़ी हुई थी। रात का समय था कोई नाविक भी दिखायी नहीं दे रहा था जो उनको वह नदी पार करा ले जाता।

उन्होंने इधर देखा उधर देखा कि उनको नदी पार करने का कोई साधन मिल जाये जिससे वे उस नदी को पार कर सकें तभी उनको नदी में बहती हुई एक लाश दिखायी दे गयी।

उन्होंने उस लाश को लकड़ी का एक लट्टा समझा तो उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसके सहारे तैर कर नदी के दूसरे किनारे की तरफ जाने लगे।

नदी पार करने के बाद वह अपनी पत्नी के घर पहुँचे तो रात के समय दामाद जी का घर का दरवाजा खुलवाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था सो उन्होंने छत पर से चढ़ कर घर में घुसने का विचार किया।

अब वह छत पर चढ़ें कैसे। उन्होंने फिर इधर उधर देखा कि कोई चीज़ उनको ऐसी मिल जाये जिसको पकड़ कर वह छत पर चढ़ जायें।

पास में ही एक मरा हुआ साँप पड़ा था। वह उनको एक रस्सी लगी सो उन्होंने उस मरे हुए साँप को उठा कर रस्सी की तरह इस्तेमाल करके उससे छत पर चढ़ गये।

छत पर चढ़ कर वह बहुत खुश हुए और तुरन्त ही अपनी पत्नी के कमरे में पहुँचे। पत्नी इस तरह अचानक रात को पति को अपने कमरे में देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। उसको बहुत शरम आयी कि अगले दिन वह अपने घर वालों से क्या कहेगी।

उसने तुलसीदास से कहा — “जितना प्रेम तुम्हारा मेरे प्रति है अगर उससे दसवाँ हिस्सा भी तुम्हारा प्रेम श्रीराम के चरणों में होता तो तुम्हारा यह जीवन धन्य हो गया होता।”

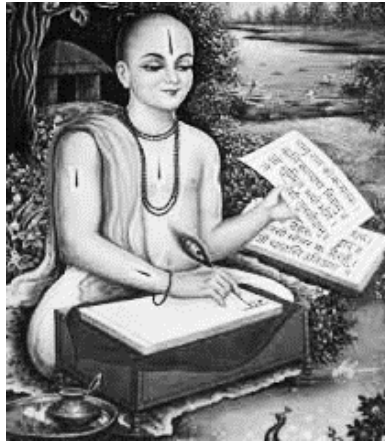
पत्नी के इस वाक्य ने तुलसीदास जी की आँखें खोल दीं। वह तुरन्त ही वहाँ से वापस चल दिये।

बाद में उनको पता चला कि जिस चीज़ को उन्होंने लकड़ी का लट्टा समझ कर नदी पार की थी वह लकड़ी का लट्टा नहीं था बल्कि एक लाश थी।

इसके अलावा जिस चीज़ को वह रस्सी समझ कर पत्नी के घर की छत पर चढ़े थे वह रस्सी नहीं बल्कि एक मरा हुआ साँप था।

ये दोनों ही बातें जान कर और सोच कर उनको अपने मन में बहुत ग्लानि हुई और वह अपने आपको धिक्कारने लगे। उसके बाद उन्होंने श्रीराम के चरणों में अपना मन लगाया और श्रीराम के बारे में बहुत कुछ लिखा।

यही वह घटना थी जिसने उनको आज का बहुत बड़ा संत कवि और श्रीराम भक्त बना दिया। अगर उनकी पत्नी ने उस रात उनसे वह वाक्य न कहा होता तो आज वह वह न होते जो आज हैं।



8 स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म 1863 में भारतवर्ष के बंगाल प्रान्त के कलकत्ता शहर में हुआ था। इनका जन्म दिन भारत में “राष्ट्रीय युवा दिन”²² के रूप में मनाया जाता है।

इनकी मृत्यु बहुत छोटी उम्र में ही हो गयी थी, 1902 में जब ये केवल 39 साल के थे। इन्होंने पहले से ही अपने बारे में यह कह रखा था कि ये 40 साल तक भी ज़िन्दा नहीं रह पायेंगे। इनका असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्ता था और ये रामकृष्ण परमहंस जी के मुख्य शिष्यों में से एक थे।

स्वामी विवेकानन्द जी धर्म की एक कौन्फ्रेंस में 1893 में शिकागो में भाषण देने के लिये गये थे। वे जब 1893 में वहाँ गये थे तब केवल विवेकानन्द के नाम से ही गये थे। स्वामी का नाम उनको खेतरी के अजीत सिंह²³ ने दिया था।

वहाँ जाने से पहले उनकी माँ ने उनका इम्तिहान लिया कि वे देश से बाहर जाने के लिये तैयार थे भी या नहीं।²⁴ इस इम्तिहान में पास होने के बाद वे जयपुर के महाराज के पास उनके महल में रुके।

²² National Youth Day

²³ Ajit Singh of Khetari, Rajasthan

²⁴ Read this story and many other stories about him in the Book “Kuchh Aitihāsik Kahaniyan-1”, by Sushma Gupta written in Hindi language.

विवेकानन्द जी रामकृष्ण परमहंस जी के शिष्य थे सो महाराज जयपुर ने उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत किया और उनके स्वागत में एक उत्सव का आयोजन भी किया। उस उत्सव में उन्होंने वेश्याओं को भी बुलाया हुआ था।

महाराजा जयपुर उस समय शायद यह भूल गये थे कि इस प्रकार के आदमी के स्वागत में उनको वेश्याओं को नहीं बुलाना चाहिये था।

वैसे भी तब तक विवेकानन्द जी पूरे सन्यासी भी नहीं बने थे सो उनकी कामनाएँ अभी पूरी तरह से उनके नियंत्रण में भी नहीं थीं इसलिये जब उन्होंने उन वेश्याओं को देखा तो वे अपने कमरे में जा कर बैठ गये और अपना कमरा बन्द कर लिया।

महाराज जयपुर ने जब यह देखा तो उनको लगा कि उनसे गलती हो गयी और उन्होंने विवेकानन्द जी से माफी माँगी।

फिर भी उन्होंने एक वेश्या की तरफ इशारा करके उनसे कहा कि दूसरी वेश्याओं को तो पैसे पहले से ही दे दिये गये हैं पर यह वेश्या देश की सबसे बड़ी वेश्या है। अगर इसको ऐसे ही भेज दिया जायेगा तो यह इसका बहुत बड़ा अपमान होगा। आप बाहर तो आर्यें।

विवेकानन्द जी अपने कमरे से बाहर आने में डर रहे थे कि उस वेश्या ने दुखी होते हुए एक गीत गाना शुरू किया। वह एक ऐसा

गीत गा रही थी जो एक सन्यासी के लिये गाया जाता है। उसका गीत बहुत सुन्दर था जिसका मतलब था —

“मुझे मालूम है कि मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ पर फिर भी कम से कम तुम तो मुझसे अच्छा व्यवहार कर सकते थे। मुझे यह भी मालूम है कि मैं रास्ते की धूल हूँ पर तुमको मेरे साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार नहीं करना चाहिये।

मैं तो कुछ भी नहीं हूँ एक अज्ञानी हूँ पापी हूँ पर तुम तो एक पवित्र आत्मा हो तो फिर तुम मुझसे क्यों डरते हो।”

विवेकानन्द जी ने उसका यह गीत अपने कमरे के अन्दर से ही सुना तो उनकी अन्तरात्मा ने उनको धिक्कारा कि वे उसके साथ यह कैसा व्यवहार कर रहे थे।

उन्होंने तुरन्त ही अपने कमरे का दरवाजा खोल दिया और कमरे से बाहर आ कर बैठ गये। उनको लगा कि आज एक वेश्या ने एक सन्यासी को हरा दिया था।

उस दिन उन्होंने अपनी डायरी में लिखा “आज मुझे ईश्वर से एक नयी रोशनी मिली। मैं उससे बहुत डरा हुआ था। जरूर ही मेरे अन्दर कोई इच्छा रही होगी जिसकी वजह से मैं उससे डर गया था।

पर लगता है कि उसका मन मेरे मन से ज़्यादा साफ था इसी लिये उसने मुझे हरा दिया। मैंने ऐसी पवित्र और शुद्ध आत्मा पहले कभी कहीं नहीं देखी। अब मुझे उससे कोई डर नहीं है।”

और उस दिन एक वेश्या से विवेकानन्द जी को तटस्थ रहने का ज्ञान मिला जिससे वे सच्चे अर्थों में सन्यासी बन गये ।

इस तरह एक वेश्या के एक गीत ने स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन एक ऐसे रास्ते पर डाल दिया जिसको अपनाने के लिये शायद उन्हें न जाने कितनी कोशिशें करनी पड़तीं और फिर भी इस बात का कोई यकीन नहीं था कि वह उस रास्ते पर पहुँच ही जाते ।

इस तरह इनको सच्चा सन्यासी बनाने में इनकी ज़िन्दगी का रुख बदलने में भी एक स्त्री का ही हाथ था ।



देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेक्नोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyar.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html

17 चालाक ईकटोमी

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

18 नौस देशों की लोक कथाएँ-1

<http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html>

19 नौस देशों की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html>

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्जन अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एल एस आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर 2018